P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 **SHRINKHALA :** VOL-1 * ISSUE-III*November-2014
E: ISSN NO.: 2349 – 980X

जनसंख्या वृद्धि के परिप्रेक्ष्य में छत्तीसगढ़

मंजुलता कश्यप
सहायक प्राध्यापक, अर्थशास्त्र
ठाकुर छेदीलाल शासकीय
स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
जॉजगीर

सारांश

सन् 1951 में छत्तीसगढ़ में जनसंख्या 74.57 लाख थी, जो आज 2011 में 255.40 लाख हो गई है, अर्थात् 60 वर्षों में जनसंख्या में 180.83 लाख वृद्धि हुई जो जनाधिक्य की स्थिति को प्रदर्शित करता है। जनसंख्या वृद्धि ने समस्त विकास योजनाओं को बाधित कर दिया है। इस दृष्टि से जनसंख्या नियंत्रण के लिए दो स्तर पर प्रयास आवश्यक है। एक तो परिवार नियोजन कार्यक्रमों द्वारा बढ़ती जनसंख्या पर रोक लगाना, दूसरा – सामाजिक आर्थिक प्रयासों द्वारा लोगो को बेहतर जीवन स्तर प्रदान करना। हमें अपने अस्तित्व को बचाने के लिए जनसंख्या कार्यक्रम को लागू करना जरूरी ही नहीं बल्कि अनिवार्य हो गया है अन्यथा मानव का अस्तित्व मिटने में देर नहीं लगेगी।

मुख्य शब्द : जनाधिक्य, विकास, जनसंख्या नियंत्रण।

प्रस्तावना

वर्तमान में जनसंख्या वृद्धि नें संपूर्ण विश्व के बुद्धिजीवियों का ध्यान अपनी ओर केन्द्रित कर लिया है, क्योंकि जिस दर से जनसंख्या में वृद्धि हो रही है, उससे भविष्य में जनसंख्या का स्वरूप अत्यंत ही विकराल हो जाएगा और आम जनजीवन का सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक पक्ष बहुत अधिक प्रभावित होगा, जिससे मानव जीवन का अस्तित्व भी खतरे में पड़ सकता है। जनाधिक्य ही गरीबी, बेरोजगारी, कुपोषण, आर्थिक एवं सामाजिक असमानता, क्षेत्रीय असंतुलन आदि का मूल कारण है।

संयुक्त राष्ट्र संघ के जनसंख्या अनुमान की 2008 रिवीजन ऑफ द वर्ल्ड पापुलेशन प्रास्पेक्ट्स शीर्षक से मार्च 2009 में जारी एक रिपोर्ट में 2050 में विश्व की कुल जनसंख्या 9.18 अरब प्रक्षेपित की गई है। सन् 2050 में भारत की जनसंख्या 159.3 करोड तथा चीन की जनसंख्या 139.2 करोड़ हो जाने का अनुमान लगाया गया है जो विकास के संदर्भ में उचित नहीं है।

भारत में सन 1872 में सर्वप्रथम जनगणना की गई थी, किन्तु जनसंख्या का क्रमवार आकलंन सन् 1881 से किया जा रहा है। सन् 1891 में भारत की कुल जनसंख्या 23.6 करोड थी जो 1 मार्च 2011 को 121.02 करोड़ हो गई। भारत के समान छत्तीसगढ़ की भी प्रमुख समस्या जनसंख्या वृद्धि ही है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की कुल जनसंख्या का 2.11 प्रतिशत भाग यहां निवास करती है। 2011 की जनगणना के अनुसार छत्तीसगढ़ की कुल जनसंख्या 25540196 है जिसमें पुरूषों की जनसंख्या 12827915 तथा महिलाओं की 12712281 है। लिंगानुपात 991 है जो राष्ट्रीय औसत 940 से अधिक है। साक्षरता दर 71.04 प्रतिशत है, जिसमें पुरूष साक्षरता 81.45 प्रतिशत तथा महिला साक्षरता दर 60.59 प्रतिशत है। जनसंख्या घनत्व 189 है।

छत्तीसगढ़ में जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्ति को तालिका क्रमांक 1 में प्रदर्शित किया गया है–

तालिका क्रमांक – 1छत्तीसगढ़ में जनसंख्या वृद्धि

जनगणना वर्ष	जनसंख्या (लाख में)	दशक में परिवर्तन (लाख में)	दशक में वृद्धि दर (प्रतिशत में)	औसत वार्षिक वृद्धि दर (प्रतिशत में)
1901	41.82	—	—	—
1911	51.92	10.1	24.15	2.41
1921	52.65	0.73	1.40	0.14
1931	60.29	7.64	14.51	1.45
1941	68.15	7.86	13.04	1.30
1951	74.57	6.42	9.42	0.94
1961	91.55	16.98	22.77	2.27
1971	116.38	24.83	27.12	2.71
1981	140.11	23.73	20.39	2.03
1991	176.15	36.04	25.73	2.57
2001	208.11	31.96	18.15	1.81
2011	255.40	47.29	22.59	2.25

स्त्रोत – सामान्य अध्ययन, भारतीय अर्थव्यवस्था

तालिका से स्पष्ट है कि सन् 1901 में छत्तीसगढ़ की जनसंख्या 41.82 लाख थी जो 30 वर्षों के पश्चात् सन् 1931 में बढ़कर 60.29 लाख हो गई अर्थात् 18.47 लाख वृद्धि हुई। वृद्धि दर 1.47 प्रतिशत रही। द्वितीय चरण 1931 से 1961 में 31.26 लाख की वृद्धि हुई। वृद्धि दर 1. 72 प्रतिशत रही। तृतीय चरण में 1961–1991 में जनसंख्या में अत्यधिक वृद्धि 84.6 लाख हुई तथा जनसंख्या वृद्धि दर 3.08 प्रतिशत रही। 1991–2001 के दशक में जनसंख्या में 31.96 लाख की वृद्धि हुई तथा वृद्धि दर 1.87 प्रतिशत रही है। 2001–2011 के दशक में जनसंख्या में 47.29 लाख की वृद्धि हुई तथा वृद्धि दर 2.25 प्रतिशत रही। सन् 1951 में छत्तीसगढ़ में जनसंख्या 74.57 लाख थी, जो आज 2011 में 255.40 लाख हो गई है अर्थात् 60 वर्षों में जनसंख्या में 180. 83 लाख वृद्धि हुई। जो जनाधिक्य की स्थिति को प्रदर्शित करता है।

जनाधिक्य के लिए कुछ प्रमुख कारण विशेष रूप से उत्तरदायी है – शिक्षा का निम्न स्तर, धार्मिक व सामाजिक अंधविश्वास, लड़के की अनिवार्यता, परिवार नियोजन में कमी, उच्च जन्म दर, विवाह की सर्वव्यापकता, स्वास्थ्य की बेहतर देखभाल, बुनियादी चीजों की आधिक उपलब्धता आदि।

जनसंख्या वृद्धि का आर्थिक विकास पर प्रभाव

उपर्युक्त कारणों से पिछले 60 वर्षों में छत्तीसगढ़ की जनसंख्या में तीव्र गति से वृद्धि हुई है जिससे खाद्यान्न, पानी और अन्य सुविधाओं की अधिक आवश्यकता के साथ–साथ धरती के तापमान में वृद्धि की आशंका है, जिससे जलवायु परिवर्तन की चुनौती अधिक गंभीर हो सकती है। लिंगानुपात में असमानता, गरीबी, बेरोजगारी में वृद्धि आदि भी जनसंख्या वृद्धि के प्रभावों के रूप में परिलक्षित होते है। दिन प्रतिदिन बढ़ते अपराध की जड़े बढ़ती जनसंख्या से जुडी है जनसंख्या वृद्धि ने समस्त विकास योजनाओं को बाधित कर दिया है।

1. जनसंख्या वृद्धि से पर्यावरण की समस्या उत्पन्न हो गई है। प्रकृति के साथ अनावश्यक छेड़छाड करने से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से मौसम परिवर्तन, समुद्र व जीव– जन्तुओं पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। तापमान में वृद्धि होकर बर्फ सामान्य से अधिक मात्रा में पिघलने लगी है। साथ ही कार्बन डाई आक्साईड जैसी ग्रीन हाऊस प्रभाव वाली गैस भी निरन्तर बढ़ी है जो मानव जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है।
2. व्यक्ति ने भौतिकवादी सुविधाओं के चलते प्राकृतिक संपदाओं का निर्मम एवं अवैज्ञानिक तरीके से विदोहन किया है जिससे हमारी प्रकृति असंतुलित हो गई है।
3. अनेक पशु पक्षियो एव वन्य जीवों का अस्तित्व ही खतरे में पड़ गया है।
4. आधुनिक खेती के नाम पर कीटनाशक एवं रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग अत्यधिक करने से लोगो के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।
5. अधिक मात्रा में वाहनों का प्रयोग होने से दुर्घटनाएं एवं वाहनों से निकले धुएं से वायु प्रदूषण एवं ध्वनि प्रदूषण निरन्तर बढ़ता जा रहा है जो मानव के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है।
6. देश का आर्थिक विकास अवरूद्ध हो रहा है।
7. बेरोजगारी की समस्या का सामना भी लोगो को करना पड़ रहा है।
8. अधिकतर लोग कुपोषण का शिकार हो रहे है।
9. आवासीय समस्या हल करने के लिए कृषि योग्य भूमि पर मकानों का निर्माण किया जा रहा है जिसका परिणाम खाद्यान्न समस्या के रूप में सामने आयेगा।
10. देश में उपलब्ध जल का 70 प्रतिशत भाग प्रदूषित जल की श्रेणी में आ गया है। यदि जनसंख्या वृद्धि इसी गति से होती रही हो भविष्य में जल की समस्या विकराल रूप धारण कर लेगी।
11. वनों के कटने से कुछ क्षेत्रो में सूखा तथा कुछ क्षेत्रो में बाढ़ की स्थिति निर्मित हो गई है।

जनसंख्या नियंत्रण की रणनीति

छत्तीसगढ़ में जनसंख्या सिर्फ इसलिए समस्या नहीं है कि यहां एक निश्चित भौगोलिक क्षेत्र के निवासियों की संख्या बहुत अधिक है, बल्कि यह इस कारण भी भयावह नजर आती है कि उनमें से अधिकांश अमानवीय परिस्थितियों में जीने को मजबूर है। अतः जनसंख्या वृद्धि को कम करने के लिए प्रयास करना चाहिए, क्योंकि जनांकिकीय चक्र उस अवस्था में पहुंच चुका है, जिसमें जनसंख्या विस्फोट हो सकता है। इस दृष्टि से जनसंख्या नियंत्रण के लिए दो स्तर पर प्रयास आवश्यक है – एक तो परिवार नियोजन कार्यक्रमों द्वारा बढ़ती जनसंख्या पर रोक लगाना, दूसरा सामाजिक आर्थिक प्रयासों द्वारा लोगों को बेहतर जीवन स्तर प्रदान करना।

जनसंख्या पर नियंत्रण के लिए देश में 1996 में काहिरा मॉडल लागू है जिसके अनुसार शिक्षा के माध्यम से छोटे परिवार के प्रति चेतना पैदा की जाती है।

जनसंख्या वृद्धि विकास को प्रभावित कर रही है। यही कारण है कि देश के नीति निर्माताओं का ध्यान निरन्तर जनसंख्या नियंत्रित करने के प्रयासों पर लगा रहा है। आज आवश्यकता इस बात की हो गई है कि अकेले नीति निर्माताओं के भरोसे इस समस्या पर काबू नहीं पाया जा सकता। अतः हम सभी को इस समस्या पर गंभीरता पूर्वक विचार करना होगा। जनसंख्या नियत्रंण हेतु निम्न सुझाव अपनाए जा सकते है।

1. हमे अपनी शिक्षा प्रणाली में राष्ट्रीय समस्याओं को शामिल करना चाहिए एवं रोजगार उन्मुख बनाना चाहिए, तथा सभी के लिए प्राथमिक शिक्षा अनिवार्य होनी चाहिए।
2. लोगों में सामाजिक सुरक्षा की भावना को विकसित किया जाये ताकि वे ये न सोच सके कि हम अधिक बच्चे पैदा कर ही सामाजिक रूप से सुरक्षित रह सकते है।
3. सरकार द्वारा विवाह हेतु निर्धारित अधिकतम आयु सीमा का कड़ाई से पालन सुनिश्चित किया जाये।
4. सरकार द्वारा प्रभावी परिवार नियोजन के कार्यक्रम बनाकर उनको प्रचारित प्रसारित एवं लागू किया जाए।
5. जनसंख्या नियंत्रण हेतु स्वंय सेवी संगठनों का प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग लिया जाये।

6. प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम एवं साक्षरता अभियान को परिवार नियोजन कार्यक्रम के साथ अप्रत्यक्ष रूप से जोड़ देना चाहिए।
7. जनसंख्या नियंत्रण में महिलाओं का विशेष रूप सेयोगदान होता है। अतः उन्हे मानसिक रूप से सुदृढ़ बनाया जाय।
8. लिंगभेद समाप्त करने के लिए लड़की को और अधिक कानूनी अधिकार दिए जाए।
9. ग्रामीण क्षेत्रो में मनोरंजन के साधनों का विस्तार किया जाये।
10. सरकार द्वारा प्रभावी जनसंख्या नीति बनाई जानी चाहिए और उसको समय–समय पर आवश्यकतानुसार परिवर्तित करते रहना चाहिए।

सरकार के इन प्रयासों का परिणाम छत्तीसगढ़ की प्रगति के रूप में देखा जा सकता है –

तालिका क्रमांक – 2

छत्तीसगढ़ की प्रगति

क्रमांक	विवरण	2000–01	2010–11
1	प्रति व्यक्ति आय	10125 रू.	44057 रू.
2	शिशु मृत्यु दर	95 प्रति हजार	54 प्रति हजार
3	मातृ मृत्यु दर	407 प्रति लाख	335 प्रति लाख
4	कुपोषण दर	61	52
5	संस्थागत प्रसव	14 प्रतिशत	53 प्रतिशत
6	विद्युतीकरण का प्रतिशत	91.66	97.13
7	प्राथमिक शालाओं की संख्या	26025	37386
8	सिंचाई का रकबा	23 प्रतिशत	32 प्रतिशत
9	कृषि ऋण ब्याज दर	14 प्रतिशत	3 प्रतिशत
10	मुफ्त बिजली	कोई सुविधा नहीं	5 हार्स पावर तक के सिंचाई पम्पों को वार्षिक 6 हजार यूनिट

तालिका से स्पष्ट है कि छत्तीसगढ़ में पिछले 10 वर्षो की तुलना में प्रगति तो हुई है परन्तु यदि जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण किया जाए जो प्रगति की दर बढ़ सकती है। इसके लिए सामाजिक वातावरण में परिवर्तन लाया जाए। जनसंख्या वृद्धि के लिए जिम्मेदार गलत परम्पराओ, मान्यताओं, रूढ़ियो तथा अंधविश्वासों का तर्कपूर्ण ढंग से समाधान कर जनसंख्या नियंत्रण हेतु प्रभावी वातावरण तैयार किया जाए। वर्तमान में लागू – ''हम दो–हमारे दो'' के सिद्धान्त को कठोरता से लागू करने की जरूरत है। आर्थिक विकास का लाभ जनता को तब ही मिल सकता है, जब जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण हों।

निष्कर्ष

आर्थिक विकास और लोगो की सामाजिक उन्नति में जनसंख्या वृद्धि सबसे बड़ी बाधा है। अतः हम सभी को यह बात राष्ट्र एवं स्वयं के हित में सोचनी होगी कि जनसंख्या नियंत्रण जीवन स्तर ऊँचा उठाने का एक सामूहिक प्रयास है। इसमें हमे पूर्ण रूप से सक्रिय होकर सहयोग करना है। हमें अपने अस्तित्व को बचाने के लिए जनसंख्या कार्यक्रम को लागू करना जरूरी ही नहीं बल्कि अनिवार्य हो गया है, अन्यथा मानव का अस्तित्व मिटने में देर नहीं लगेगी।

संदर्भ

1. सामान्य अध्ययन – भारतीय अर्थव्यवस्था 2011–12
2. हमारा छत्तीसगढ़ – शोभा यादव, मार्च 2000
3. छत्तीसगढ़ एक अध्ययन – प्रतियोगिता साहित्य 2004
4. योजना – जुलाई 2003, जुलाई 2006, जून 2010
5. कुरूक्षेत्र – सितम्बर 2003, जुलाई 2008
6. समाचार पत्र – दैनिक भास्कर – 31 अक्टूबर 2011, 21 दिसम्बर 2011 हरिभूमि – 31 अक्टूबर 2011, 20 दिसम्बर 2011